आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:16/06/2022; Published:24/06/2022

मेरी ख़ामोशी

- अनवर सुहैल
मुंबई

मेरी ख़ामोशी में
छिपी है इक चीख...

जिसे सुनता हूँ खुद
और खुद ही कर लेता हूँ
अपने कान बंद....

यह एक नुस्खा है
बहुत दिनों तक
अपनी आवाज़ सलामत रखने का
और इसमें खतरे भी नही हैं

कितना डराते रहते हो
मेरे हमदम
मेरी खामोशियों के अनुवादक
भयभीत करते रहते हो मुझे
और मेरी चीखें जज़्ब होती जाती हैं मुझमे

जाने कब इन चीखों को
सुन सकेगा ज़माना
कहीं हम खुद न सो जाएँ
दास्ताँ कहने की तमन्ना पाले.....

****